REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

रामायण में अयोध्या काण्ड

अन्जु रानी

शोध आलेख सार

भूमिका – रामायण हिन्दु स्मृति का वह अंग है जिसके माध्यम से रघुवंश के राजा राम की गाथा कही गयी। यह आदि कवि वाल्मीकि द्वारा लिखा गया। संस्कृत का एक अनुपम महाकाव्य है। इसके 24000 श्लोक है। इसे आदिकाव्यं तथा इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि की आदिकवि भी कहा जाता है। रामायण के सात अध्याय है जो काण्ड के नाम से जाने जाते है। हिन्दु शास्त्रो के अनुसार भगवान राम, विष्णु के अवतार थे। इस अवतार का उद्देश्य मृत्युलोक में मानवजाति की आदर्श जीवन के लिये मार्गदर्शन देना था। अन्ततः श्रीराम ने राक्षस जाति के राजा रावण का वध किया और धर्म की पुनस्थापना की।

अयोध्या काण्डः– राम के विवाह के कुछ समय पश्चात राजा दशरथ ने राम का राज्याभिषेक करना चाहा। इस पर देवताओं की चिन्ता हुई कि राम की राज्य मिल जाने पर रावण का वध असम्भव ही जाऐगा। व्याकुल होकर उन्होंने देवी सरस्वती से किसी प्रकार के उपाय करने की प्रार्थना की। सरस्वती ने मंथरा, जो कि कैकेयी की दासी थी, कि बुद्धि को फेर दिया। मंथरा की सलाह से कैकेयी कोपभवन में चली गई। दशरथ जब मनाने आये तो कैकेयी ने उनसे वरदान मांगे कि भरत की राजा बनाया जाये और राम की चौदह वर्षों के लिये वनवास में भेज दिया जाए।

राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी बन चले गये। ऋंगवेरपुर में निषादराज गुह्य ने तीनीं की बहुत सेवा की। कुछ आनाकानी करने के बाद केवट ने तीनों की गंगा नदी के पास उतारा। प्रयाग पहुंच कर राम ने भरद्वाज मुनि से भेंट की। वहां से राम यमुना स्नान करने के बाद हुए वाल्मीकि ऋषि के आश्रम पहुंचे। वाल्मीकि में हुई मन्त्रणा के अनुसार राम, सीता और लक्ष्मण चित्रकुट में निवास करने लगे।

अयोध्या में पुत्र के वियोग के कारण दशरथ का स्वर्गवास ही गया। वशिष्ठ ने भरत और शत्रुहन की उनके ननिहाल से बुलवा लिया। वापस आने पर भरत ने अपनी माता कैकेयी की, उसकी कुटिलता के लिए, बहुत भर्तस्ना की और गुरूजनों के आज्ञानुसार दशरथ की अन्त्योष्टि क्रिया कर दिया। भरत ने अयोध्या के राज्य की अस्वीकर कर दिया और राम को मना कर वापस लाने के लिए समस्त स्नेही जनीं के साथ चित्रकुट चले गए। कैकेयी की भी अपने किए पर अत्यंत पाश्चात्याताप हुआ। सीता के माता–पिता सुनयना एवं जनक भी चित्रकुट पहुंचे। भरत तथा अन्य सभी लोगों ने राम के वापस अयोध्या जाकर राज्य करने का प्रस्ताव रखा जिसे कि राम ने, पिता की आज्ञा पालन करने और रघुवंश की रीति निभाने के लिए अमान्य कर दिया।

भरत अपने स्नेही जनों के साथ राम की पादुका की साथ लेकर वापस अयोध्या आ गए। उन्होंने राम की पादुका को राज सिंहासन पर विराजित कर दिया। स्वयं नन्दिग्राम में निवास करने लगे।

रामायण की सीख :– रामायण के सारे चरित्र अपने धर्म का पालन करते है। राम एक आदर्श पुत्र है। पिता की आज्ञा उनके लिए सर्वोपरि है। पति के रूप में राम ने सदैव एक पत्नी व्रत का पालन किया है।

- सीता का पतिव्रत महान है। सारे वैभव और ऐश्वर्य को ठुकरा कर वे पति के साथ वन चली गई।
- हनुमान एक आदर्श भक्त है, वे राम की सेवा के लिए अनुचर के समान सदैव तत्पर रहते है। शक्तिबाण से मूर्छित लक्ष्मण को उनकी सेवा के कारण ही प्राणदान प्राप्त होता है।
- रावण के चरित्र से सीख मिलती है कि अहंकार नाश का कारण होता है।

रामायण द्वारा प्रेरित अन्य साहित्यिक महाकाव्य –

- वाल्मीकि रामायण से प्रेरित होकर संत तुलसीदास ने रामचरित जैसे महाकाव्य की रचना की जो कि वाल्मीकि के द्वारा संस्कृत में लिखे गए रामायण का हिंदी संस्करण है।
- रामायण से ही प्रेरित होकर मैथिलीशरण गुप्त ने पंचवटी तथा साकेत नामक खंडकाव्यों की रचना की। रामायण में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के उल्लेखनीय त्याग को शायद भूलवश अनदेखा कर दिया गया है।